29

मसीही व्यक्ति और व्यवस्था

(7:1-14)

जैसा पहले कहा गया था कि रोमियों 6 अध्याय मसीही व्यज़्ति के पाप से सज़्बन्ध पर है, जबकि रोमियों 7 व्यवस्था के साथ मसीही व्यज़्ति के सज़्बन्ध की बात करता है। अध्याय के बारे में जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है कि "'व्यवस्था' या 'आज्ञा' या 'लिखित नियम' का उल्लेख अध्याय की पहली चौदह आयतों में से प्रत्येक में और 7:1 से 8:4 तक चलने वाले पूरे भाग में लगभग पैंतीस बार है।"[1] सामान्य प्रासंगिकता व्यवस्था के लिए बनाई जा सकती है, परन्तु पौलुस का मुज़्य ज़ोर मूसा की व्यवस्था पर था (देखें 7:7)।

यहूदी लोग व्यवस्था को "परमेश्वर का सर्वोज़म उपहार" मानते थे।[2] राजा दाऊद ने लिखा था, "यहोवा की व्यवस्था ज़री है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं" (भजन संहिता 19:7)। परन्तु रोमियों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने व्यवस्था के विषय में इस प्रकार लिखा:

... व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा (3:20क)।

... व्यवस्था तो क्रोध उपजाती है (4:15क)।

... व्यवस्था बीच में आ गई कि अपराध बहुत हो (5:20क)।

... तुम व्यवस्था के आधीन नहीं बरन अनुग्रह के आधीन हो (6:14)।

पौलुस के यहूदी पाठकों को लगा होगा कि वह उन्हें दिए परमेश्वर के सबसे बड़े उपहार को नकार रहा है। पौलुस के लिए व्यवस्था के सज़्बन्ध में कही अपनी बातों को खोलकर समझाने और उनका स्पष्टीकरण देने का समय आ गया था। अध्याय 7 में उसने ऐसा ही किया।

इस पाठ में हम फिर से 1 से 6 आयतों में मुज़्य वाज़्यांशों पर ध्यान देंगे। फिर हम 7 से 14 आयतों पर ध्यान लगाएंगे। वचन पाठ को पूरा कर लेने के बाद पाठ आज मसीही लोगों के लिए प्रासंगिकता बनाएगा।

वचन पाठ पर उपयुक्त टिप्पणियां

मसीही व्यज़्ति का व्यवस्था से ज़्या सज़्बन्ध है?

अध्याय 7 का आरज़्भ पौलुस ने यह ध्यान दिलाते हुए किया कि "जब तक मनुष्य जीवित

रहता है, तब तक उस पर व्यवस्था की प्रभुता रहती है?'' (आयत 1ख)। अपनी बात उसने विवाह का उदाहरण देकर समझाई: कोई स्त्री कानून के अनुसार अपने पति से तब तक बंधी है, जब तक वह जीवित है; परन्तु यदि पति मर जाता है तो वह उससे ''छूट गई'' और कानूनी तौर पर पुन: विवाह कर सकती है (आयतें 2, 3)। अनुवादित शब्द ''छूट गई'' यूनानी के *katargeo* से लिया गया है। लियोन मौरिस ने सुझाव दिया है कि *katargeo* एक मज़बूत शब्द है, जिसका अर्थ ''पूरी तरह से रद्द करना'' है।[3]

पौलुस ने यह प्रासंगिकता बनाई: ''सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए, कि उस दूसरे के हो जाओ, जो मरे हुओं में से जी उठा: ...'' (आयत 4)। व्यवस्था से हमारे सम्बन्ध के बारे में पौलुस का यह पहला बड़ा कथन है: हम ''मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए'' मर गए। यह ''मृत्यु'' तब हुई, जब हमारे विश्वास ने हमें ''उसकी मृत्यु का बपतिस्मा'' लेने में अगुआई की (6:3)।

उसके बाद पौलुस ने बात की कि व्यवस्था के लिए मरे होने से पहले का जीवन कैसा था: ''क्योंकि जब हम शारीरिक थे, तो पापों की अभिलाषाएं जो व्यवस्था के द्वारा थीं, मृत्यु का फल उत्पन्न करने के लिए हमारे अंगों में काम करती थीं'' (7:5)। व्यवस्था का उद्देश्य पापों की अभिलाषाएं बढ़ाना नहीं था। व्यवस्था का उद्देश्य पाप को सामने लाना और इसका अर्थ बताना और लोगों को अपने जीवनों से पाप को निकालने के लिए प्रोत्साहित करना था। तौ भी व्यवस्था का एक *परिणाम* यह हुआ कि इसने पाप की अभिलाषाएं उत्पन्न कीं। 8 से 13 आयतों में पौलुस ने एक उदाहरण दिया कि व्यवस्था ने उसके मन में लालच कैसे पैदा किया।

व्यवस्था पाप को *कैसे* उत्पन्न करती थी? कुछ सुझाव इस प्रकार हैं (बेशक वे एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं)। पहला तो व्यवस्था पाप की ओर ध्यान दिलाती थी। यदि मैं आपसे यह कहूं कि ''हाथी'' के बारे में मत सोचो, तो आपका ध्यान तुरन्त हाथी की ओर चला जाएगा। शायद दिन, हफ़्ते या कई साल बीत गए थे, जब आपने हाथी के बारे में सोचा था; परन्तु जैसे ही मैं कहता हूं, ''हाथी के बारे में *मत* सोचे,'' तो यह आपके दिमाग में आ जाता है। मैंने एक आदमी के बारे में पढ़ा, जिसने दस आज्ञाओं वाले एक पोस्टर पर आपत्ति की। उसने कहा, ''इससे लोगों के दिमाग में बहुत अधिक विचार आ जाते हैं।''[4] अपनी नज़रों के सामने परमेश्वर की नज़र को रखना अच्छा है (देखें यहेजकेल 37:20), परन्तु ''मत करना'' की आज्ञाओं के कुछ लोगों के दिमाग में ''विचार डालने'' की बात में वह व्यक्ति सही हो सकता है।

दूसरा, रोके जाने से हो सकता है कि निषेधित वस्तु की ओर विशेष ध्यान जाए। जब हम ''बाहर रहें'' का चिह्न देखते हैं तो हमें उत्सुकता सी होती है कि हमें कोई ''बाहर रखना'' क्यों चाहता है। वह चिह्न आमतौर पर हमें खतरे से बचाने के लिए होता है, परन्तु हमें लगता है कि उस चिह्न के आगे कोई ऐसी बात है जिसे कोई नहीं चाहता कि हम देखें। इसका उत्कृष्ट उदाहरण भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से न खाने की परमेश्वर की मनाही है (उत्पत्ति 2:16, 17; 3:1-5)।

जब हमें कोई काम *न* करने के लिए कहा जाता है तो हम में से कई लोग ज़िद पकड़ लेते हैं जिस कारण हम वही काम करना *चाहते* हैं। हो सकता है कि इससे पहले उसे करने की हमारी कोई इच्छा न हो, परन्तु रोके जाने पर हम उसे अवश्य करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए एक संकेत को ही ले लें जिसमें लिखा है, ''पेंट गीला है, इसे न छूएं।'' सम्भवतया उस तख़्ती के रखे जाने से पहले

किसी को पेंट की उस वस्तु को छूने में कोई दिलचस्पी नहीं थी; परन्तु जैसे ही लिखकर लगाया गया, उस नये-नये पेंट पर उंगलियों के कई निशान दिखाई देने लगे।

अन्त में कुछ लोगों को अधिकार के विरुद्ध विद्रोह करने का आनन्द आता है, यहां तक कि उन्हें अपने आप में शक्ति का बोध होता है। जब नीतिवचन वाली चरित्रहीन स्त्री जवानों को फुसलाने की कोशिश कर रही थी, तो उसने चुपके से कहा, "चोरी का पानी मीठा होता है" (नीतिवचन 9:17क)। यदि कोई अधिकार न होता तो विद्रोह भी न होता; सो एक अर्थ में यह कहा जा सकता है कि अधिकार विद्रोह को "उत्पन्न करता" है।

इन मानवीय प्रवृत्तियों से परिचित पौलुस ने कहा कि "पापों की अभिलाषाएं ... व्यवस्था के द्वारा थीं" (रोमियों 7:5क)। उसने कहा, "परन्तु ... अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए" हैं (आयत 6क)। "छूट गए" के लिए वही शब्द है जो आयत 2 में है, जहां हम ने पढ़ा कि एक स्त्री अपने पति के मर जाने पर विवाह के अपने बंधनों से "छूट गई" है। यह शब्द इस बात का संकेत देता है कि पुराना सम्बन्ध "रद्द" हो गया था।

पौलुस ने कहा, "जिस के बन्धन में हम थे उसके लिए *मर कर,* अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए" (आयत 6क, ख)। "जिसके बन्धन में हम थे" यहां व्यवस्था को कहा गया है। पतरस ने व्यवस्था को "ऐसा हुआ" कहा जिसे "न हमारे बाप-दादे उठा सके थे और न हम उठा सकते" हैं (प्रेरितों 15:10)। लोग उस "जुए" से कब और कैसे मरते थे? आयत 4 के अनुसार, वे "मसीह की देह [क्रूस पर] के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए" (रोमियों 7:4)। जैसा कि हमारे पिछले पाठ में ज़ोर दिया गया था, फिर वे मसीह की दुल्हन अर्थात कलीसिया का भाग बनने के लिए स्वतन्त्र हो गए।

क्या इसका अर्थ यह है कि व्यवस्था बुरी है?

पौलुस इस बात से भली-भांति परिचित था कि जो कुछ उसने कहा था, वह व्याकुल करने वाला होता, विशेषकर उसके यहूदी पाठकों को। इस कारण उसने व्यवस्था के विषय में कही अपनी बात की व्याख्या और विस्तार के लिए फुर्ती की। एक बार फिर उसने प्रश्न-उत्तर का ढंग इस्तेमाल किया। उसने इन प्रश्नों के साथ आरम्भ किया: "तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है?" (आयत 7क)। अध्याय 6 कई बार कहता है कि पौलुस *पाप के लिए मर गया* था (आयतें 2, 7, 11)। अध्याय 7 दो बार कहता है कि वे *व्यवस्था के लिए मर गए* थे (आयतें 4, 6)। तो क्या पौलुस "पाप" और "व्यवस्था" को मिला रहा था? इस विचार पर उसका उत्तर तुरन्त और ज़ोरदार था "कदापि नहीं!" (आयत 7ख)।

वह यह ज़ोर देने के लिए आगे बढ़ा कि व्यवस्था पाप नहीं थी और न ही अपने आप में या अपने आप से पाप को जन्म देती थी। इसने तो पाप को *प्रकट* किया था। पौलुस ने कहा, "व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानता" (आयत 7ग)। पहले उसने कहा था कि "... व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है" (3:20)।

"हम" (आयत 7क) से "मैं" (आयत 7ग) में जाने की ओर ध्यान दें। यहां से लेकर अध्याय के अन्त तक, पौलुस ने अधिकतर उत्तम पुरुष एक वचन ("मैं") का इस्तेमाल किया। उसकी टिप्पणियां अत्यंत व्यक्तिगत हैं।

रोमियों 7 पर काफ़ी विवाद खड़ा होता है और अधिकतर विवाद "मैं" शब्द पर केन्द्रित होता है। खोजे का प्रश्न लेते हुए हम पूछते हैं, "पौलुस किस की बात कर रहा था? अपनी या किसी और की?" (देखें 8:34)। मौरिस ने सुझाव दिया कि "निश्चय ही यह इनकार करना सम्भव है कि पौलुस जो कुछ कह रहा था, वह अपनी बात ही कर रहा था। इस अध्याय में वह उज़्म पुरुष एक वचन सर्वनाम का इस्तेमाल करना जारी रखता है चाहे उसने अपने पत्र के आरम्भ से नहीं किया।"[5] पौलुस की भाषा की व्याख्या करने का सबसे आसान, सबसे स्वाभाविक और सबसे स्पष्ट ढंग इसे व्यक्तिगत अनुभवों के रूप में देखना है।[6] यह इस सम्भावना को **दिमाग** नहीं देता कि उसके दिमाग में और लोग भी थे। जो बात उसके लिए विशेष थी वही दूसरों के लिए भी हो सकती है।

यह मानते हुए कि पौलुस अपनी ही बात कर रहा था, यह कहने के बाद कि "बिना व्यवस्था के मैं पापा को न पहचानता" उसने एक विशेष उदाहरण दिया: "व्यवस्था यदि न कहती, कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता" (आयत 7घ)। लालच करने के विरुद्ध आज्ञा दस आज्ञाओं में से दसवीं है (निर्गमन 20:17)।

रोमियों 7:7घ में "लालच" के लिए यूनानी शब्द "इच्छा" के अर्थ वाले मिश्रित शब्द (*epithumia*) से लिया गया है। नये नियम में इसका इस्तेमाल आम तौर पर बुरी इच्छा के लिए हुआ है।[7] ("अभिलाषाएं"; रोमियों 1:24)। एफ़. एफ. ब्रूस के अनुसार आम तौर पर इसका संकेत "अपने आप को ऊंना करने की ऐसी ललक है कि मनुष्य के मन में यह वह स्थान लेने लगता जिस पर केवल परमेश्वर का अधिकार है।"[8]

पौलुस ने निर्गमन में से पूरी आज्ञा को नहीं दोहराया। उसे लालच की बात की उतनी चिंता नहीं थी, जितनी परमेश्वर से बढ़कर *किसी भी* अत्यधिक इच्छा रखने की सामान्य अवधारणा थी।

लालच न करने की आज्ञा पौलुस द्वारा दिए जाने वाले तर्क के उद्देश्य से आदर्श रूप में मेल नहीं खाती थी। पहले तो यह विशेष तौर पर और केवल मन लिए निर्देशित आज्ञा थी। दूसरी आज्ञाओं को बाहरी कार्यों के साथ माना जा सकता था (कम से कम ऊपरी तौर पर), परन्तु इस आज्ञा को नहीं।

यह आज्ञा हर पाप के कारण अर्थात *स्वार्थ* का सामना करने के लिए बनाई गई थी। कहते हैं कि लालच प्रेम का विरोधी है। लालच आत्म केन्द्रित होता है जबकि प्रेम "अपनी भलाई नहीं चाहता" (1 कुरिन्थियों 13:5)। लालच प्राप्त करने पर ध्यान रखता है जबकि प्रेम *देने* पर ध्यान रखता है (देखें यूहन्ना 3:16)।

इसके अलावा यह आज्ञा और *भ्रमित करने वाले* पापों के लिए थी (देखें रोमियों 7:11)। जब तक किसी को बताया नहीं जाता कि लालच क्या है और इसके क्या खतरे हो सकते हैं, तब तक उसे लग सकता है कि यह "स्वाभाविक" और "सामान्य" है। वस्तुएं *चाहना* स्वाभाविक नहीं है?

व्यवस्था ने पौलुस पर लालच की परिभाषा और इसके स्वभाव को प्रकट किया। जिसमें इसने लालच का परिचय पाप के रूप में कराया। क्या इससे वह लालची *बन* गया? नहीं। अपराधी व्यवस्था नहीं, बल्कि *पाप* था। जैसा कि पौलुस ने तुरन्त ध्यान दिलाया: "परन्तु *पाप* ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच[9] उत्पन्न किया" (आयत 8क)। "पाप" को परमेश्वर की आज्ञा न मानने के लिए हमें उकसाने वाले कारक के रूप में दिखाया गया है। हम

समझते हैं कि वास्तविक कारक शैतान है (देखें इफिसियों 6:11; 1 पतरस 5:8), परन्तु पौलुस का उद्देश्य "व्यवस्था" और "पाप" में अन्तर करना था (आयतें 7, 12, 13)। इस कारण उसने उस पर ध्यान रखा जो पाप करता है।

लालच न करने की आज्ञा ने पौलुस को लालची नहीं बनाया, परन्तु पाप में लालच करने के लिए "*अवसर* पाकर" आज्ञा के द्वारा लाभ उठाया। पौलुस उस आत्मिक युद्ध की झलक दिखाते हुए, जिसमें हम लगे हुए हैं सैनिक शज़्दावली का इस्तेमाल कर रहा था (देखें इफिसियों 6:10-13)। "अवसर" शज़्द *aphorme* से अनुवाद किया गया है जिसका अर्थ "आरज़्भिक स्थान" है और इसका "इस्तेमाल युद्ध में कार्यवाहियों के आधार के संकेत के लिया किया जाता था।" रोमियों 7:8, 11 में पौलुस के कहने का अर्थ था कि "प्राण पर आक्रमण करने के लिए व्यवस्था ने पाप को अपनी कार्यवाही का आधार दे दिया।"[10]

व्यवस्था का इस्तेमाल अपनी "कार्यवाहियों के आधार" के रूप में करते हुए पाप ने पौलुस पर आक्रमण करके उसमें "हर प्रकार का लालच" उत्पन्न किया। जो न केवल अपने पड़ोसी की वस्तु का लालच था बल्कि बहुत सी चीज़ों का लालच था। इस प्रकार पाप ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्यवस्था का शोषण किया।

पाप ने यह *कैसे* किया? पहले हमने इस विषय पर सुझाव दिए थे कि व्यवस्था में पाप की अभिलाषाएं कैसे उत्पन्न कीं: इसने पाप की ओर ध्यान दिलाया; इससे पाप के प्रति कुछ आकर्षण बढ़ा; इससे विद्रोह की भावना भड़की; इसने "खतरे" के रोमांच के लिए कुछ लोगों में इच्छा को आकर्षित किया। परन्तु हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि केवल आज्ञा के होने से यह सब हो गया। नहीं, पर्दे के पीछे पाप (शैतान) है, जो इन परिणामों को उत्पन्न करने के लिए आज्ञा का *इस्तेमाल करता* है। उदाहरण के लिए जब सांप (शैतान; 2 कुरिन्थियों 11:3) हव्वा के पास आया, तो पहले उसने परमेश्वर की आज्ञा की ओर ध्यान दिलाया (उत्पज़ि 3:1)। उसने संकेत दिया कि परमेश्वर पक्षपाती था, यानी वह आदम और हव्वा से किसी वांछनीय वस्तु को रोकने की कोशिश कर रहा था (आयतें 4, 5)। सांप ने आज्ञा न मानने को आकर्षित बना दिया (आयतें, 5, 6), जिसका परिणाम विद्रोह हुआ (आयत 6)।

आइए अपने वर्तमान वचन पाठ में चलते हैं: "ज़्योंकि बिना व्यवस्था पाप मुर्दा है" (आयत 8ख)। "पाप तो व्यवस्था का विरोध है" (1 यूहन्ना 3:4), जिसका अर्थ यह हुआ कि जहां व्यवस्था नहीं है, वहां पाप भी नहीं है। "जो व्यवस्था हो ही न उसे तोड़ा नहीं जा सकता" (रोमियों 7:8; NIRV)। फिर अदन की वाटिका एक अच्छा उदाहरण है। जब तक परमेश्वर ने आदम और हव्वा को निर्देश नहीं दिए, तब तक सांप (शैतान) के पास उन्हें भरमाने को कोई आधार नहीं था।

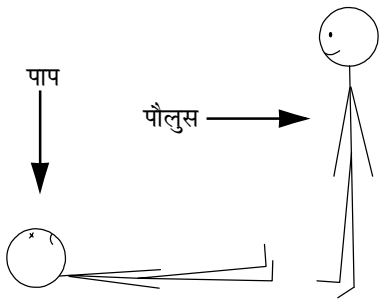

पौलुस ने आगे कहा, "मैं तो व्यवस्था बिना पहले जीवित था" (आयत 9क)। टीकाकार इस बात पर उलझन में हैं कि पौलुस "व्यवस्था के बिना जीवित" कब था। समस्या यह है कि उनमें से कई भ्रमित विश्वास को मानते हैं कि बच्चे जन्म से किसी

न किसी प्रकार आदम के पाप से दूषित होते हैं। उनके लिए जो वचन की इस बात से सहमत हैं कि बच्चों में आदम के पाप का दोष नहीं होता, इस आयत को समझने का आसान ढंग है कि सब बच्चों की तरह, पौलुस का जन्म शुद्ध और पवित्र (परमेश्वर के सामने "जीवित"), व्यवस्था से पूरी तरह से अज्ञात ("व्यवस्था के बिना") था। यहां पर पाप उसके लिए "मृत" था, परन्तु वह "जीवित" था। फिर हम पढ़ते हैं, "आज्ञा आई" (आयत 9ख)। सब यहूदी लड़कों की तरह पौलुस को व्यवस्था की शिक्षा दी गई (देखें 2 तीमुथियुस 3:15क)। बीच में कहीं उसमें नैतिक विवेक बढ़ा और वह परमेश्वर के प्रति ज़िज़्मेदार हो गया।

> ... परिपज़्वता जब आई जब उसने व्यवस्था की बातें मानने के लिए जिज़्मेदारी को मान लिया। उसने वर्तमान में *बारमित्ज़्वा* संस्कार [सामान्यतया तेरह वर्ष की आयु में] यहूदी लड़के के भाग लेने और "आज्ञा का पुत्र" बनने के जुए को स्वीकार किया।[11]

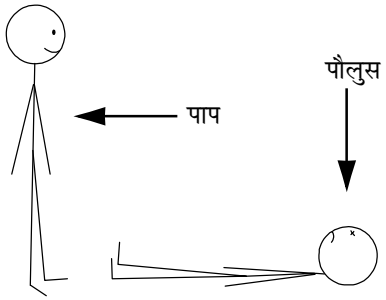

पौलुस ने कहा कि "जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया, और मैं मर गया" (आयत 9ख, ग)। जब वह बच्चा था तो पाप मरा हुआ था और वह जीवित था। परन्तु ज़िज़्मेदारी की उम्र तक पहुंचने पर, पाप "जीवन में फैल गया" (NIV) और वह आत्मिक तौर पर मर गया।

"आज्ञा" का उद्देश्य "जीवन के लिए" (आयत 10क; देखें लैव्यव्यवस्था 18:5; रोमियों 18:5), परन्तु पौलुस के लिए इसका यह परिणाम नहीं था। उसने कहा, "वही आज्ञा जो [अन्त तक रहने वाले आत्मिक] जीवन के लिए थी, मेरे लिए [आत्मिक] मृत्यु का कारण ठहरी [जब मैं आज्ञा को पूरी नहीं कर पाया]" (7:10)।

ज़्या इसका अर्थ यह था कि आज्ञा में कोई बुराई नहीं थी? नहीं, आज्ञा अपने आप में अच्छी थी, परन्तु पाप (शैतान) ने इसका *इस्तेमाल* बुरे उद्देश्यों के लिए किया: "ज़्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया" (आयत 11क)। आयत 8 में पौलुस ने कहा कि पाप ने आज्ञा का इस्तेमाल हर प्रकार के लोग उत्पन्न करने के लिए "कार्यों के आधार" के रूप में किया। आयत 11 में उसने इसी शज़्द का इस्तेमाल किया और कहा कि पाप ने उसे *बहकाने* के लिए आज्ञा का इस्तेमाल किया।

यूनानी शज़्द का अनुवाद "बहकाया" (*exapatao*) से किया गया है, जो इस शज़्द को "धोखा देता/ठगता" के लिए लेता है (*apato*) और इसे उपसर्ग *ek* के साथ मजबूत करता है। यह "*पूरी तरह* धोखा देने अर्थात *पूर्णतया* ठगने का संकेत देता है।"[12]

मौरिस का अवलोकन है कि "भरमाने में धोखे का कुछ तत्व रहता ही है।"[13] यदि पाप ने अपने वास्तविक स्वभाव तथा इसके अन्तिम परिणामों के विषय में धोखा नहीं दिया होता, तो कोई पाप करने की इच्छा करता ही नहीं। एक टीका में लिखा गया है कि पाप "झूठी प्रतिज्ञाओं और धोखे से भरा है":

- पाप हमेशा हमारी इच्छाओं को पिछली बात से अधिक संतुष्ट करने की प्रतिज्ञाएं करता है।
- पाप प्रतिज्ञा करता है कि हमारे कार्य गुप्त रखे जा सकते हैं, जिससे किसी को पता न चले।
- पाप प्रतिज्ञा करता है कि हमें परिणामों की चिंता करने की आवश्यकता नहीं।
- पाप विशेष लाभों जैसे बुद्धि, ज्ञान और दुनियादारी की प्रतिज्ञा करता है।
- पाप बदले में सहयोग के लिए शक्ति और प्रतिष्ठा की प्रतिज्ञा करता है।[14]

पौलुस के अपने अनुभव के बारे में, पाप (शैतान) ने "उसे यह मानने में धोखा दिया और भरमाया कि वह मूसा की व्यवस्था को मानकर धार्मिकता और जीवन पा सकता है" (फिलिप्पियों 3:4-7) और "यह सोचने में कि मसीही लोगों को सताकर वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है (प्रेरित 26:9), जबकि हकीकत में वह अपने आपको सबसे बड़ा पापी बना रहा था (1 तीमुथियुस 1:15)।"[15] इस प्रकार एक अर्थ में पौलुस ने कहा कि "आज्ञा के द्वारा, पाप ने मुझे मार डाला" (रोमियों 7:11ख)। उसे मारने वाला *पाप* था न कि व्यवस्था।

पौलुस द्वारा दिए गए क्रम की रूपरेखा को इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है। (1) एक समय पर (जब वह बच्चा था), वह "जीवित" था। (2) फिर "आज्ञा आई" जब उसने व्यवस्था को जाना। (3) व्यवस्था का उद्देश्य उसे निरन्तर जीवन देना था। (4) परन्तु पाप ने व्यवस्था का इस्तेमाल उसे भरमाने के लिए किया। (5) पाप से भरमाए जाकर उसने व्यवस्था को तोड़ा। (6) जिसका परिणाम आत्मिक मृत्यु था। यह पौलुस के जीवन का क्रम था और हर व्यक्ति के जीवन का भी जो ज़िम्मेदारी की उम्र तक रहता है।

यह क्रम आदम और हव्वा की कहानी को दिखाता है। (1) परमेश्वर द्वारा मना किए जाने से पहले वे "जीवित" थे। (2) फिर "आज्ञा आई": परमेश्वर ने कहा, "कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना ज़टके ज़ा सकता है: पर ज़ले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कज़ी न ज़ाना: ज़्योंकि जिस दिन तू उसका फल ज़ाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा" (उत्पज़ि 2:16, 17)। (3) आज्ञा का उद्देश्य उन्हें जीने की अनुमति देना था: जब तक वे परमेश्वर की बात को मानते तब तक वे जीवन के वृक्ष में से खा सकते थे। (पाप करने के बाद उन्हें इसकी मनाही कर दी गई [उत्पज़ि 3:21]।) (4) परन्तु पाप (शैतान) ने इस आज्ञा का इस्तेमाल हव्वा को बहकाने के लिए किया (3:1-5; देखें 2 कुरिन्थियों 11:3; 1 तीमुथियुस 2:14)। (5) परिणामस्वरूप आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी (उत्पज़ि 3:6)। (6) इसका परिणाम शारीरिक और आत्मिक दोनों की मृत्यु हुआ (3:24; 5:5; देखें यशायाह 59:1, 2)।

पौलुस अपना निष्कर्ष देने को तैयार था: "इसलिए व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा[16] भी ठीक और अच्छी है" (रोमियों 7:12)। यदि आप बिना अधिक विचार किए, 7 से 12 आयतों को जल्दी से पढ़ें तो आयत 12 आपको आश्चर्यजनक लगेगी। कोई सोच सकता है कि "एक मिनट रुकना! पौलुस हमें बता रहा है कि पाप ने लोगों को भरमाने और हर प्रकार के बुरे काम करने का कारण बनने के लिए किस प्रकार व्यवस्था का इस्तेमाल किया! अब अचानक वह कहता है कि व्यवस्था *अच्छी* है।" इस तथ्य को न भूलें कि 7 से 12 आयतों में पौलुस व्यवस्था का बचाव *कर रहा* था। उसने ज़ोर दिया था कि उसे व्यवस्था ने नहीं, बल्कि *पाप* ने मारा था (देखें आयत 13)। इसलिए

वह यह दावा करने से नहीं हिचकिचाया कि "व्यवस्था [अपने आप में] पवित्र है और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है।"

"व्यवस्था पवित्र है [*hagios*] और आज्ञा पवित्र है।" ज़्योंकि वे एक पवित्र परमेश्वर द्वारा दी गई थी। "आज्ञा ठीक [*dikaios*] है" ज़्योंकि यह असीमित रूप से निष्पक्ष और न्यायसंगत है "आज्ञा अच्छी है [*agathos*] ज़्योंकि यह मनुष्यजाति को आशीष देने के लिए दी गई थी।" आयत 12 आयत 7 के प्रश्न कि "ज़्या व्यवस्था पाप है?" के लिए पौलुस का पज़्का उज़र है कि नहीं, नहीं, नहीं। इसके विपरीत यह "पवित्र और सही और अच्छी है।"

आयत 13 में हमें 7 से 12 आयतों का सार मिलता है। इस आयत का आरज़्भ पौलुस के प्रसिद्ध प्रश्न उज़र के रूप से होता है: "तो ज़्या वह जो अच्छी [आज्ञा] थी, मेरे लिए [आत्मिक] मृत्यु ठहरी?" (आयत 13क)। फिर इस सुझाव ने भी कि "कदापि नहीं!" (आयत 13ख) उसे चौंका दिया।

पौलुस ने फिर से ज़ोर दिया कि वास्तविक शत्रु व्यवस्था नहीं, "परन्तु पाप" था (आयत 13ग)। व्यवस्था ने तो पाप को प्रकट किया और इसके वास्तविक स्वभाव को दिखाया: "उस अच्छी वस्तु [आज्ञा] के द्वारा मेरे लिए [आत्मिक] मृत्यु का उत्पन्न करने वाला हुआ कि उसका पाप होना प्रकट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे" (आयत 13घ)। मैं इसे आसान शज़्दों में रखता हूं: व्यवस्था और इसकी आज्ञाएं इसलिए दी गईं ताकि लोग देख और समझ सकें कि पाप वास्तव में कितना "अत्यधिक पापपूर्ण है।"

पाप कितना पापपूर्ण है? यह इतना पापपूर्ण, इतना भ्रष्ट, इतना दुष्ट है कि पवित्र, सही और अच्छी व्यवस्था को लेकर इसे अपवित्र, अधार्मिक और दुष्ट उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल कर सकता था। विलियम बार्कले ने लिखा है:

> पाप की भयावहता इस तथ्य से दिखाई जाती है कि यह एक अच्छी वस्तु को लेकर उसे बुराई का हथियार बना सकता था। पाप यही तो करता है। यह प्रेम की सुन्दरता को लेकर इसे वासना में बदल सकता है। यह स्वतन्त्रता की सज़्माननीय इच्छा को लेकर इसे धन और शज़्ति की धुन में बदल सकता है। ... यह अति सुन्दर वस्तुओं को लेकर भ्रष्ट करने वाले स्पष्ट के अनुसार उन्हें दूषित कर सकता है।[17]

परमेश्वर की अत्यधिक भलाई यह है कि वह बुराई को लेकर उसका इस्तेमाल भलाई के लिए कर सकता है (देखें उत्पज़ि 50:20), जबकि पाप की अत्यधिक पापपूर्णता यह है कि यह भलाई को लेकर उसे बुराई के लिए इस्तेमाल कर सकता है।

यदि व्यवस्था से कोई समस्या नहीं है, तो ज़्या है?

पौलुस इस बात पर अटल था कि व्यवस्था मनुष्यजाति की समस्याओं का कारण नहीं है। आयत 14 में उसने फिर से ज़ोर देकर कहा कि यह बात सही है: "ज़्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है" (आयत 14क)। अपने आपको उनके साथ मिलाने के लिए जो व्यवस्था को बहुत सज़्मान देते थे, पौलुस कुछ देर के लिए उज़म पुरुष बहुवचन ("हम") में वापस आया। व्यवस्था आत्मिक (*pneumatikos*) थी ज़्योंकि इसका देने वाला परमेश्वर का अपना

आत्मा (*Pneuma*) था (देखें 2 पतरस 1:21)।

पौलुस ने जो कुछ व्यवस्था के लिए कहा उसे वह अपने लिए नहीं कह सकता था: ''परन्तु *मैं* शारीरिक [*sarkinos*] और पाप के साथ बिका हुआ हूं'' (रोमियों 7:14ख)। आयत 14 पर चर्चा हम अपने अगले पाठ में करेंगे। परन्तु यहां इसे पौलुस की बात पर ज़ोर देने के लिए जोड़ा गया है। समस्या व्यवस्था की नहीं, बल्कि *उसकी थी,* व्यवस्था की आज्ञाएं पवित्र, सही और अच्छी थीं परन्तु वह उन्हें पूरी तरह से नहीं मान पाया था। इस कारण व्यवस्था ने उसे व्यवस्था का तोड़ने वाला अर्थात पापी ठहराया था।

कल्पना करें कि आप ऑयल पेंटिंग की ज़्लास में हैं।[18] एक पेंटिंग जो बेहतरीन है और आपको उसे देखकर पेंटिंग बनाने के लिए कहा जाता है। आप रंग मिलाकर उन्हें अपने कैनवस पर लगाते हैं। आप पेंटिंग बनाने का काम करते हैं और तन मन लगा देते हैं। तौ भी आपके कैनवस वाली तस्वीर उस तस्वीर से जिसे आप बनाने की कोशिश कर रहे हैं बिल्कुल *नहीं* मिलती। ज़्या इसका अर्थ यह है कि उस तस्वीर में कमी थी? समस्या *आपकी* है ज़्योंकि आप में उसे बनाने की निपुणता नहीं है।

वैसे ही व्यवस्था पौलुस के सामने पूरी पवित्रता, धार्मिकता और अच्छाई के साथ रखी गई थी और पौलुस को इसकी नकल करने अर्थात इसके नियमों को मानने के लिए कहा गया था। उसने पूरी कोशिश की, यहां तक कि तन-मन लगा दिया। फिर भी वह इसे पूरा नहीं कर पाया। कमी व्यवस्था में नहीं थी बल्कि पौलुस की अपनी कमज़ोरियों में थी।

शेष अध्याय व्यवस्था के अधीन पौलुस के संघर्षों और अपने प्रयासों के द्वारा सही काम करने की कोशिश करने पर उसकी परेशानी के बारे में है। यह परेशानी आयत 24 में बताई गई है, ''मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?'' फिर अगली आयत में उसने अपने ही प्रश्न का उज़र दिया: ''मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं [कि मैं स्वतन्त्र हूं]: निदान मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूं'' (आयत 25क)।

वचनपाठ से व्यावहारिक निष्कर्ष

अध्याय 7 की अन्तिम आयतों का अध्ययन हम अगले एक पाठ में करेंगे। अभी मैं एक से चौदह आयतों को फिर से देखना और मसीही व्यक्ति और व्यवस्था के बारे में कुछ व्यावहारिक अवलोकन बनाना चाहता हूं।

याद रखें कि पौलुस के दिमाग में मुज़्यतया मूसा की व्यवस्था थी (देखें आयत 7)।[19] परन्तु आमतौर पर मूसा इसकी प्रासंगिकता मूसा की व्यवस्था से अधिक की जा सकती है। हमारे वचनपाठ में पौलुस ने कई बार ''व्यवस्था'' के लिए निश्चित उपपद (आयतें 7 [दो बार], 12, 14)[20] के लिए यूनानी शज़्द का और कई बार बिना निश्चित उपपद के इस्तेमाल किया (आयतें 7-9)। इसलिए आइए मूसा की व्यवस्था और सामान्य व्यवस्था दोनों पर विचार करते हैं।

व्यवस्था बुरी नहीं है।

पहले मैं यह ध्यान दिलाना चाहता हूं कि व्यवस्था अपने आप में बुरी नहीं है। पौलुस ने जिस

प्रकार व्यवस्था के बारे में बात की, उससे और पिछले अध्यायों से ऐसा लग सकता है कि वह कह रहा था कि व्यवस्था बुरी है। अध्याय 7 में उसने ज़ोर दिया कि व्यवस्था *अच्छी* है (आयत 12)। यह पाप *नहीं* थी बल्कि पाप को प्रकट करती है (आयत 7)।

जब कोई डॉक्टर कहता है कि मरीज को तुरन्त दिल के ऑपरेशन की आवश्यकता है, तो ज़्या डॉक्टर मरीज के स्वास्थ्य की समस्या के लिए ज़िम्मेदार होता है? जब तेज़ रोशनी में कीचड़ और गारा दिखाई देने लगे, तो ज़्या इसका अर्थ यह होता है कि वह कूड़ा रोशनी से बन गया? जब मैं बाथरूम के तराज़ू पर पैर रखूं और उसकी सुई एकदम से ऊपर उठ जाए तो ज़्या इसका अर्थ यह होगा कि मेरे भार बढ़ने का ज़िम्मेदार वह तराज़ू है? हमारे वचनपाठ में पौलुस ने ज़ोर दिया कि व्यवस्था का उद्देश्य पाप को सामने लाना था। इससे इस पर पाप की ज़िम्मेदारी नहीं बढ़ गई।

हमें व्यवस्था की आवश्यकता है।

कई लोग सुझाव देते हैं कि पाप की समस्या का समाधान उस व्यवस्था से पीछा छुड़ाना है, जो पाप को सामने लाती है। परन्तु यदि आदमी के दिल की बीमारी का पता लगाने वाला डॉक्टर ही नहीं होगा तो ज़्या वह इससे ठीक हो जाएगा? यदि मिट्टी और कूड़े को दिखाने वाली रोशनी नहीं होती तो ज़्या इससे गंदगी खत्म हो जाएगी? यदि मैं संसार के सब तराज़ुओं को तोड़ डालूं तो ज़्या इससे मेरे भार की समस्या खत्म हो जाएगी?

हमारे वचन पाठ में पौलुस ने यह साबित किया कि हमें व्यवस्था की *आवश्यकता* है। हमें सामान्य अर्थ में व्यवस्था की आवश्यकता है। रिचर्ड रोजर्स ने लिखा है, "हमें व्यवस्था के लिए आभारी होना चाहिए ज़्योंकि यह जीवन को संचालित करती है"; "यह जीवन की रक्षा करती है।"[21] बिना व्यवस्था के केवल अराजकता और कोलाहल ही होगा। व्यवस्थाहीन समाज स्वविनाशकारी समाज है। सबसे बड़कर हमें *परमेश्वर की* व्यवस्था की आवश्यकता है। परमेश्वर की व्यवस्था (1) व्यवस्था देने वाले के स्वभाव तथा चरित्र को दिखाती है, (2) हमारे जीवनों का अर्थ और उद्देश्य बताती है, (3) वह मार्ग दिखाती है जिस पर हमें चलना चाहिए और हमें मार्ग पर बने रहने के लिए प्रोत्साहित करती है और (4) आज्ञा मानने के प्रतिफलों और न मानने के दण्डों की रूपरेखा देती है।

कई लोग व्यवस्था के निषेधात्मक स्वभाव का विरोध करते हैं, परन्तु परमेश्वर के नियम हमारी रक्षा के लिए दिए गए थे। जब मैं एक फार्म में बड़ा हो रहा था तो मेरे परिवार ने हमारे पशुओं के गिर्द बाड़ लगा दी। बाड़ से पशुओं की रक्षा होती थी। बाड़ किसी बछड़े को सड़क पर जाकर किसी कार से टज़्कर लगने के लिए भटकने से बचा सकती थी। बाड़ किसी गाय को अलफ़लफ़ा मैदान में बाहर जाने से रोक सकती थी, जहां से वह बहुत अधिक खाकर गज़्भीर रूप से बीमार हो सकती थी। कुछ पशु बाड़ को तोड़कर उछलकर निकल जाते थे। कई बार मैंने अपने पिता को पानी में डूबी गाय या घोड़े को दबाव से राहत दिलाने और उसका जीवन बचाने के प्रयास में उसके पेट में चाकू डालते देखा है।

परमेश्वर के नियम अच्छे और आवश्यक हैं। वे हमारी सहायता और हमारी रक्षा के लिए दिए गए हैं।

हम मूसा की व्यवस्था से बंधे नहीं हैं।

जब मैं कहता हूं कि हमें व्यवस्था की आवश्यकता है, तो मुझे यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि मेरे दिमाग में कौन सी व्यवस्था है। हमारा वचनपाठ यह स्पष्ट करता है कि आज मूसा की व्यवस्था से कोई बंधा नहीं है।[22] गलातियों की पुस्तक में पौलुस ने समझाया कि व्यवस्था अस्थाई उद्देश्य के लिए दी गई थी जिसे इसने पूरा कर दिया था (देखें 3:19, 23-25)। रोमियों की पुस्तक में उसका मूल ढंग अलग था, जिसमें उसने इस तथ्य पर ज़ोर दिया कि व्यवस्था बचा नहीं सकती (देखें रोमियों 3:20क)। साथ ही वह यह ध्यान दिलाने से नहीं हिचकिचाया कि यीशु की मृत्यु के बाद लोग अब मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं।

फिर से रोमियों 7 के पहले भाग को देखें। पौलुस ने कहा, "सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की [क्रूसित] देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरे हुए बन गए" (आयत 4क)। फिर उसने कहा, "परन्तु जिस के बन्धन में हम थे उसके लिए मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए" (आयत 6क)। यहां पर उसकी शिक्षा इस तथ्य पर नये नियम के अन्य वचनों से मेल खाती है कि यहूदियों के साथ परमेश्वर की वाचा पूरी करके उठा ली गई है (देखें कुलुस्सियों 2:14; इफिसियों 2:14, 15; इब्रानियों 7:11-22; 8:7-13; 9:1; 10:9, 10)।

कई बार यह सुझाव दिया जाता है कि व्यवस्था के *नागरिक* नियम रद्द कर दिए गए हैं, परन्तु व्यवस्था के *नैतिक* नियम अभी भी लागू हैं। डXलस जे. मू ने "नागरिक, औपचारिक और नैतिक नियम" को "संदेहास्पद" कहा। उसने कहा, "निश्चित रूप से यहूदी लोग व्यवस्था को इस प्रकार नहीं डांटते थे, और नये नियम से प्रमाण के आरज़्भिक मसीही ऐसा करते हों बहुत कम हैं।"[23] नागरिक/नैतिक अन्तर से मूल समस्या यह है कि इसका उपयोग हो सकता है। उदाहरण के लिए यह ज़ोर देने के लिए कि दस आज्ञाएं नैतिक नियम का सार हैं सात दिन तक के सज़्त के नियम को आज भी बाध्य बना देगा (देखें निर्गमन 20:8-11)। मूल नैतिक नियमों के विषय में यह सोचना बेहतर है कि वे व्यवस्था दिए जाने से पहले भी थे (उदाहरण के लिए देखें उत्पज़ि 9:6)। ऐसे नियम पहले मूसा की व्यवस्था में मिलाए गए थे और फिर बाद में यीशु की नई वाचा में।

रोमियों 15:4 में पौलुस ने कहा कि "जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें।" इस पद का अध्ययन करने के समय मैं मसीही व्यज़्ति के पुराने नियम के इस्तेमाल पर चर्चा करूंगा। आम तौर पर इससे हमें नये नियम के नैतिक नियमों को पुराने नियम में परिभाषित और दिखाए गए ढंग से समझने में सहायता मिलती है।

आज भी हम व्यवस्था के अधीन हैं।

कई लोग व्यवस्था पर पौलुस की शिक्षा को उससे कहीं आगे ले जाते हैं, जहां उसने चाहा था। वे कहते हैं, "हम केवल मूसा की व्यवस्था से ही स्वतन्त्र नहीं हैं, बल्कि किसी *भी* धार्मिक व्यवस्था से छूट गए हैं।" यह सत्य है कि आज हम व्यवस्था/कामों के प्रबन्ध के अधीन नहीं हैं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने हमें मानने के लिए कोई नियम नहीं दिया या हम उसके नियमों के अधीन नहीं हैं।

आज कई लोग "व्यवस्था" शब्द को बिगाड़ देते हैं, परन्तु पौलुस और नये नियम के अन्य लेखकों ने इस शब्द का इस्तेमाल करने में हिचकिचाहट नहीं की (देखें 1 कुरिन्थियों 9:21; गलातियों 6:2; याकूब 1:25)। इसके अलावा कइयों को "आज्ञाएं" मानने का विचार पसन्द नहीं है; परन्तु यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे" (यूहन्ना 14:15)। पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को याद दिलाया कि "परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना ही सब कुछ है" (1 कुरिन्थियों 7:19ख)। अपना पहला पत्र लिखने का यूहन्ना का एक उद्देश्य विधि विरोधितता (यह विश्वास कि नियमों/आज्ञाओं का मानना अनावश्यक है) का सामना करना था (देखें 1 यूहन्ना 2:3, 4; 3:22, 24; 5:2, 3)।

आज हम जिन नियमों के अधीन हैं वे यीशु के नये नियम में मिलते हैं। यह वही नई वाचा है जिसकी भविष्यवाणी यिर्मयाह द्वारा की गई थी (यिर्मयाह 31:31-34; देखें इब्रानियों 8:7-13), अर्थात वही नियम जो क्रूस पर यीशु की मृत्यु पर प्रभावी हुआ (देखें इब्रानियों 9:16, 17)।

व्यवस्था हमें बचाती नहीं है, बचा नहीं सकती।

हम नये नियम में पाए जाने वाले नियमों के अधीन हैं, परन्तु हमें यह समझने की आवश्यकता है कि कोई व्यवस्था चाहे वह नये नियम की व्यवस्था ही हो, हमें बचा नहीं सकती। व्यवस्था का स्वभाव बचाना नहीं है। व्यवस्था पाप का अर्थ बता सकती है, परन्तु पाप को दूर नहीं कर सकती। यह पाप को सामने ला सकती है, परन्तु पाप का उपचार नहीं बता सकती। यह पाप को गलत ठहरा सकती है परन्तु पापी को शांति नहीं दे सकती। फिर से प्रकाश के उदाहरण पर ध्यान दें: व्यवस्था का प्रकाश हमारे जीवनों की दरारों और गहरी खुली दरारों को दिखा सकता है, परन्तु यह खोखली जगहों को भर नहीं सकता। व्यवस्था का प्रकाश हमारे जीवनों के अंधेरे कोनों में छिपी गंदगी को सामने ला सकता है, परन्तु यह उस कूड़े को हटा नहीं सकता।[24]

व्यवस्था हमें अपने पापी होने से परिचित भी करा सकती है परन्तु हमारे दोष को निकाल नहीं सकती, इसलिए हम मनुष्यजाति को परमेश्वर द्वारा व्यवस्था देने के एक और उद्देश्य को जोड़ सकते हैं: उद्धार के लिए लोग कहीं और देखें विशेषकर हमें उसके अनुग्रह की अत्यन्त आवश्यकता से अवगत कराना। पौलुस ने कहा कि मूसा की व्यवस्था लोगों को यीशु तक लाने के लिए दी गई (गलातियों 3:24)। एक अर्थ में परमेश्वर द्वारा दी गई हर व्यवस्था का उद्देश्य लोगों को यीशु की ओर लाना है।

सारांश

अगले पाठ में हम रोमियों 7 अध्याय पर और बात करेंगे। आइए इस समय कुछ प्रश्नों के साथ इस पाठ को समाप्त करते हैं:

- ज़्या आप इस तथ्य को समझते हैं कि परमेश्वर को आपकी इतनी चिंता है कि आपके जीवन में दिशा देने के लिए उसने नियम दिए?
- ज़्या आप समझते हैं कि आज हम मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं, मसीह के नये नियम के अधीन हैं?

- ज़्या आपके मन में यह स्पष्ट है कि हम केवल नियमों को मानकर उद्धार नहीं पा सकते, बल्कि हमारा उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से होना आवश्यक है ?
- ज़्या आप समझते हैं कि परमेश्वर के अनुग्रह को समझने के लिए यीशु ने ज़्या करने को कहा (यूहन्ना 3:16; लूका 13:3; मज़ी 10:32; मरकुस 16:15, 16; यूहन्ना 14:15) ?
- ज़्या आपने वह *किया* है, जो यीशु ने आपसे करने के लिए कहा ?

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

आप यह तुलना करते हुए कि पाप ने आदम को कैसे मारा, पाप ने पौलुस को कैसे मारा और पाप हमें कैसे मारता है, एक चार्ट बना सकते हैं। इस पाठ की प्रासंगिकता के भाग को एक और ढंग से लिया जा सकता है: ''व्यवस्था का स्वभाव ऊंचा किया गया''; ''व्यवस्था का उद्देश्य समझाया गया''; ''व्यवस्था की कमज़ोरी दिखाई गई।''[25]

टिप्पणियां

[1]जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट, *द मैसेज ऑफ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीज़्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 189. [2]जेज़्स आर. एडवर्ड्स *रोमन्स,* न्यू इंटरनैशनल बिज़्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिज़्सन पज़्लिशर्स, 1992), 186. [3]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1988), 271. [4]एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1985), 121. [5]मौरिस, 277. [6]इस स्थिति के साथ कुछ समस्याएं हैं, विशेषकर अध्याय के अन्तिम भाग के सज़्बन्ध में, अगले पाठ पर उन में चर्चा की जाएगी। [7]इच्छा के लिए अंग्रेज़ी शज़्द ''desire'' और ''desires'' रोमियों की पुस्तक में और मिलते हैं जहां उनका इस्तेमाल *अच्छी* इच्छाओं के लिए हुआ है (देखें रोमियों 9:18; 10:1)। परन्तु उनका इस्तेमाल अलग यूनानी शज़्द से हुआ है। [8]ब्रूस, 140. [9]KJV में यहां ''concupiscence'' (काम वासना) है। आज इस शज़्द का इस्तेमाल बहुत कम होता है जिसका अर्थ ''तीव्र इच्छा'' या ''वासना'' है। NKJV में ''बुरी इच्छा'' है। [10]डज़्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट जूनि., *वाइन'स कज़्पलीट एज़्सपोजिस्टरी डिज़्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पज़्लिशर्स, 1985), 440.

[11]रिचर्ड ए. बैटे, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैज़्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 94. [12]वाइन, 151. [13]मौरिस, 283. प्रकाशितवाज़्य 12 में शैतान का परिचय ''सारे संसार को भरमाने वाला'' के रूप में दिया गया है (आयत 9; देखें 2 कुरिन्थियों 2:11; 11:14; इफिसियों 6:11)। [14]ब्रूस बर्टन, डेविड वीरमन, एण्ड नील विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पज़्लिशर्स, 1992), 138. विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेयली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 96 में ऐसे ही प्वायंट दिए गए हैं। [15]जे. डज़्ल्यू. मैज़्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडल्टन, *थिस्सलोनियंस, कोरन्थियंस, गलेशियंस एण्ड रोमन्स* (सिनसिनाटी: स्टैंडर्ड पज़्लिशिंग, तिथि नहीं), 353. [16]पौलुस ने ''व्यवस्था'' और ''आज्ञा'' का इस्तेमाल सज़्भवतया एक दूसरे के स्थान पर किया। यदि कोई अन्तर किया जाना हो, तो यह पूरी ''व्यवस्था'' और ''आज्ञा'' के बीच में किया जा सकता है जो व्यवस्था का एक भाग है। [17]बार्कले, 97. [18]जहां आप रहते हैं वहां की संस्कृति के अनुसार इसे अपनाएं: किसी चीज़ की नकल करने के लिए कहे जाने की कल्पना करें जिसके लिए वर्षों की ट्रेनिंग और अनुभव आवश्यक है। [19]7 से 13 आयतों के संदर्भ में ''आज्ञा'' विशेषकर लालच न करने की आज्ञा के सज़्बन्ध में है। [20]यूनानी भाषा में ''व्यवस्था'' के अर्थ वाले ''आज्ञा'' शज़्द में *हमेशा* निश्चित उपपद होता है (आयतें 8, 9, 10, 11, 12, 13)।

[21]रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: ए कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लज़्बॉक, टैज़्सस: सनसैट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002),

101. [22]अपरिवर्तित अन्यजाति व्यवस्था से *कभी नहीं* बंधे थे, यहां तक कि पुराने नियम के समय में भी नहीं। [23]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पज़्लिशिंग हाउस, 2000), 223. [24]चार्ल्स आर. स्विन्डल, *दि ग्रेस अवेकनिंग* (फुलर्टन, कैलिफोर्निया: इनसाइट फॉर लिविंग, 1990), 15; डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कज़्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पज़्लिशिंग, 1982), 148 से लिया गया। [25]लैरी डियसन, *"दि राइटयसनेस ऑफ़ गॉड": एन इन डेप्थ स्टडी ऑफ़ रोमन्स,* संशो. (ज़्लिफटन पार्क, न्यू यॉर्क: लाइफ कज़्युनिकेशंस, 1989), 189 से लिया गया।